डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक, दार्शनिक, नेतृत्वात्मक विचारों के संदर्भ में उनके शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन

शिक्षा शास्त्र विषय

में

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशक — शोधकर्ता

डॉ. मौ0 जावेद — नरेशपाल सिंह

सहायक प्राध्यापक

शिक्षा संकाय, आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक, दार्शनिक, नेतृत्वात्मक विचारों के संदर्भ में उनके शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन

''वह शिक्षा जो हमें न तो सक्षम बनाती है और न ही हमें समानता और नैतिकता का पाठ पढ़ाती है, वह शिक्षा नहीं है।' – डॉ भीमराव अम्बेडकर

प्रस्तावना

बुद्धिमान व्यक्ति कभी भी निराश होकर विलाप नही करते बल्कि अपने विचारों को जन–जन तक पहुँचा कर उन्हें अमली जामा पहनाने की कोशिश करते हैं। ऐसी ही डॉ. अम्बेडकर जी ने अपने विचारों की रोशनी पूरे विश्व में फैलाई बाबा साहब विभिन्न प्रतिभाओं के धनी थे। उन्होंने अपनी हर प्रतिभा का लोहा मनवाया है। भारत रत्न 'डॉ. भीमराव अम्बेडकर' महान् शिक्षा शास्त्री, राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, लेखक, वक्ता, विचारक, निर्भीक पत्रकार, जननायक, धार्मिक चिन्तक, समाज सुधारक, विधिवेता, कुशलक प्रशासक व आदर्श शिक्षक थे। दलितों के उत्थान के लिए उन्होंने अपनी महान् कृति भारतीय संविधान में अनेक अनुच्छेद व धाराओं का निर्माण किया।

भारत रत्न डॉ. अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 ई. में मध्य प्रदेश राज्य के इन्दौर जिले के निकट महूं की छावनी में अछूत कही जाने वाली 'महार' जाति में हुआ वे अपने माता–पिता की चौदहवीं सन्तान थे। वे बचपन से ही हिन्दू धर्म की सामाजिक बुराईयों से ग्रसित थे। स्कूल में भी उन्हें सब बच्चों से अलग बिठाया जाता था। बचपन से ही वे सन्त कबीर की संस्कृति से प्रभावित थे। उन्होंने 1913 में स्नातक की डिग्री अंग्रेजी और फारसी विषय सहित प्राप्त की। महाराजा सयाजीराव गायकवाड ने एक शर्त के तहत विदेश मे अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए छात्रवृति दी। वे विदेश में पढ़ने वाले पहले भारतीय दलित थे। उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की व दुनिया के महान विश्व विद्यालयों से एम.ए.,एम.एस.सी., डी.एस.सी., बॉर एट लॉ, एल.एल.डी., एल.एल.एम., ही.लिट् की डिग्री प्राप्त की।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ पर समय–समय पर अनेकों विद्वानों, राजनेताओं एवं महान् विभूतियों ने जन्म लिया, जिनमें से डॉ० भीमराव अम्बेडकर भी भारत की एक महान विभूतियों में से है, जिनको दुनिया में भारतीय संविधान निर्माता के रूप

में व दलितों के उद्धारक के रूप में जाना जाता है।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने अपना पूरा जीवन दलितों, शोषितों, वंचितों को समाज में सम्मान दिलाने का कार्य किया। डॉ० भीमराव अम्बेडकर एक कानूनविद, समाज सुधारक, नारी शक्ति के उद्धारक, महान विद्वान हैं एवं सम्पूर्ण भारतीय समाज उनके कार्यों के प्रति नतमस्तक रहेगा।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने भारत में अपनी एक अलग विचारधारा दी जिसमें एक ऐसे भारत का सपना देखा जो समृद्ध हो, शक्तिशाली हो, विकसित हो और दुनिया में अग्रणी हो। डॉ० भीमराव अम्बेडकर का मानना था कि जाति–व्यवस्था को तोड़े बिना भारत को समृद्ध और शक्तिशाली नहीं बनाया जा सकता। जाति–व्यवस्था को बनाए रखने का अर्थ है कि भारत के समृद्ध और विकसित होने में बाधा खड़ी करना।

यह एक ऐसी विचारधारा है जो भारत को एकता के सूत्र में बाँधने का काम करती है और भारत से जाति–व्यवस्था को खत्म करने पर जोर देती है। सन् 1990 में भारत सरकार ने डॉ० भीमराव अम्बेडकर को ''भारत रत्न'' देकर उनके कार्यों के प्रति उन्हें सम्मान देने का कार्य किया था। डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने विशिष्ट व्यक्तियो से प्रेरणा ली जिनमें गौतम बुद्ध, सन्तकबीर, ज्योतिबा फुले, जॉन डिवे, कार्ल मार्क्स, महात्मा गाँधी, जस्टिस रानाडे प्रमुख हैं। आदि इन सब महान, व्यक्तियों की प्रेरणा डॉ० भीमराव अम्बेडकर के विचारो में नजर आती है।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर भारत में एक न्याय सम्मत सामाजिक व्यवस्था की स्थापना के लिए दलित वर्ग के उत्थान को अनिवार्य मानते थे। उनका दृढ़ मत था कि जब तक समाज के पिछड़े और अस्पृश्य समझे जाने वाले वर्गों को अन्य वर्गों के समकक्ष सामाजिक और आर्थिक स्तर प्रदान नहीं किया जाता राजनीतिक स्वतन्त्रता निरर्थक है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बी.आर. अम्बेडकर के अनुसार समाज हमेशा वर्गो से बना होता है उनकी नींव अलग हो सकती है। समाज में एक व्यक्ति हमेशा एक वर्ग का सदस्य होता है। चाहे वह आर्थिक, बौद्धिक या सामाजिक हो। यह एक सार्वभौमिक सत्य है और प्रारम्भिक हिन्दू संस्कृति इस नियम का अपवाद हो सकती थी और हम जानते हैं कि यह नहीं

था कि यह नहीं था तो सबसे पहले किस वर्ग ने जाति में परिर्वतन किया क्योंकि वर्ग और जाति। एक अर्थ मे पड़ौसी हैं केवल एक खाई द्वारा अलग किए गए हैं। जाति एक बंद सामाजिक समूह है। वह हिन्दू और मुस्लिम दोनों के आलोचक थे और लिखते हैं सांप्रदायिक अस्वस्थता में हिन्दू और मुस्लिम दोना समूह सामाजिक न्याय के तत्काल दावों की उपेक्षा करते हैं। उनकी पुस्तक थॉट्स ऑन पाकिस्तान में मुस्लिमों के आलोचक भी शामिल हैं और उनकी पुस्तकों में हिन्दू धर्म की पहेलियां हिन्दू धर्म का दर्शन भारत में जाति का विनाश भारत में जातियां शूद्र कौन थे। भारत में बौद्ध धर्म का पतन और पागलपन के खिलाफ मनु की वह सीधे तौर पर जातिग्रस्त हिन्दू समाज की आलोचना करते हैं। अछूतों को अच्छे कपड़े नहीं पहनने के लिए मजबूर किया गया था लेकिन अम्बेडकर के लिए सूट राजनीतिक प्रतिरोध की रणनीति थी। सत्ता का दावा जाति से ग्रस्त समाज में जाति की बाधा को तोड़ने का साधन था।

अम्बेडकर ने अछूतों के लिए विधानसभा में अपने प्रतिनिधियों को भेजने के लिए अलग निर्वाचक मंडल का प्रस्ताव रखा। लेकिन गांधी ने इसका विरोध किया और पूना समझौते के बाद उनकी हार हुई। लेकिन बाद में उन्होंने निपटान आयोग की स्थापना कर वकालत की जो अनुसूचित जातियों के लिए अलग गांव प्रदान करते हैं।

1908 में अम्बेडकर ने एलफिंस्टन हाईस्कूल से अपनी दसवीं कक्षा पास की। उन्होंने 1912 में बॉम्बे विश्वद्यिालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और उनके विषयों में राजनीतिक अध्ययन और अर्थशास्त्र शमिल थे। अम्बेडकर एक बुद्धिमान छात्र थे और उन्होंने बिना किसी समस्या के अपनी सभी परीक्षाओं को पास किया। सहयाजी राव तृतीय के गायकवाड़ शासक उनसे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अम्बेडकर को 25 रूपये प्रति माह की छात्रवृत्ति दी। अम्बेडकर ने उस सारे पैसे का इस्तेमाल भारत के बाहर अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए किया। उन्होंने अर्थशास्त्र में अपनी मास्टर डिग्री पूरी करने के लिए न्यूयार्क में कोलम्बिया विश्वविद्यालय के लिए आवेदन किया। उनका चयन उस विश्वविद्यालय में हुआ और उन्होंने 1915 में अपनी मास्टर डिग्री पूरी की और यही वह समय है जब उन्होने प्राचीन भारतीय वाणिज्य नामक अपनी थीसिस दी। 1916 में उन्होंने अपनी नई थीसिस रूपये की समस्या इसकी उत्पत्ति और इसका समाधान पर काम करना शुरू किया और यही वह समय था जब उन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के लिए आवेदन किया और चयनित हो गए। इस थीसिस में गवर्नर

लॉर्ड सिडेनहैम ने भी उनकी मदद की। सिडेनहैम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एण्ड इकोनॉमिक्स में वे राजनीति विज्ञान के प्रोफसर बन गए। लेकिन उन्होंने अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखने का फैसला किया और इग्लैण्ड चले गए। उन्होंने अपनी पीएच. डी. 1927 में अर्थशास्त्र में डिग्री और उसी वर्ष कोलंबिया विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

सम्बन्धित साहित्य के महत्व को किसी भी शोध में नकारा नही जा सकता। यह शोध विषय का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पहलू है। सम्बन्धित साहित्य क्षेत्र में हुए कार्य की मात्रा में मार्गदर्शन ही नही करता बल्कि यह अनुसंधान के क्षेत्र में अन्तर व कमी जानने योग्य बनता है। सम्बन्धित साहित्य क्षेत्र में हुए कार्य की मात्रा में मार्गदर्शन ही नही करता बल्कि यह अनुसंधान के क्षेत्र में अन्तर व कमी जानने के योग्य बनाता है। सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण, का प्रमुख उद्देश्य उलझन नही है, बल्कि यह विभिन्न स्त्रोतों का विश्लेषण सर्वेक्षण है। यह शोधकर्ता का उत्साह करता है। जिससे कि वह समस्या की गहराई में जा सके व शोधकार्य के अपना लक्ष्य व सन्तुष्टि प्राप्त हो सके। यह समस्या को महारूप से समझने में भी सहायता प्रदान करता है।

किसी भी शोध को करते समय उसकी भूतकालीन दशा पर प्रकाश डाला जाता है कि बीते हुए समय में अमुक क्षेत्र या विषम में किन–किन बातों पर प्रकाश डाला गया है। अतः साहित्य दर्पण द्वारा एक नई दिशा का ज्ञान होता है। डॉ. अम्बेडकर के कार्य पर बहुत ज्यादा शोध नही हुआ है क्योंकि उनके तमाम साहित्य रचनाओं को सन्दूक में बन्द करके रखा गया था। जब दलित वर्ग शिक्षित हुआ तब यह चर्चा का विषय हुआ। महाराष्ट्र ने इस ओर ध्यान दिया। इसके उपरान्त जो उनके हाथों से लिखी साहित्यिक सामग्री थी। उसको प्रिन्ट कराया। आजकल डॉ. अम्बेडकर द्वारा रचित अंग्रेजी साहित्य को विभिन्न भाषाओं में प्रिंट करा के समाज के सम्मुख लाया जा रहा है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर चहुमुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे, उनको राजनैतिक, सामाजिक क्षेत्र, आर्थिक क्षेत्र, अर्थशास्त्र व कानून के क्षेत्र में पूर्ण माना जाता था।

गुंजाल (2012)– डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकरी हमेशा महिलाओं के नेतृत्व वाले

आंदोलनों में विश्वास करते थे। उन्होंने यह भी कहा कि यदि जीवन के सभी क्षेत्रों की महिलाओं को विश्वास में लिया जाए, तो वे सामाजिक सुधारों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों को मिटाने में बहुत बड़ी और सक्रिय भूमिका निभायी है। उन्होंने जोर देकर कहा कि प्रत्येक विवाहित महिला को अपने पति की गतिविधियों में एक मित्र के रूप में भाग लेना चाहिए। लेकिन उसे गुलामों के जीवन को नकारने का साहस दिखाना होगा। उसे समानता के सिद्धान्त पर जोर देना चाहिए। यदि सभी महिलाएं इसका पालन करें, तो उन्हें वास्तविक सम्मान और अपनी पहचान मिलेगी। महिलाओं के सवाल के बारे में अम्बेडकर की धारणा, उनके शिक्षा के अधिकार, पुरूषों के साथ समान व्यवहार, सम्पत्ति के अधिकार और राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल होने पर जोर देना वैश्विक नारीवादियों की मांग से मिलता जुलता है। जैसा कि जे.एस.मिल ने महिलाओं की अधीनता में व्यक्त किया है। एक लिंग का दूसरे लिंग की कानूनी अधीनता अपने आप में गलत है और मानव विकास के लिए प्रमुख बाधाओं में से एक है और इसे पूर्ण समानता के सिद्धान्त द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। एक तरफ कोई विशेषाधिकार या शक्ति नहीं, और न ही दूसरी तरफ अक्षमता, अम्बेडकर भी महिलाओं के लिए काम पर एक ही विचार रखते हैं।

बरनवाल (2014) – डॉ0 अम्बेडकर का तीन शब्द सूत्र शिक्षित, आंदोलन और संगठित; आज के सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली उपकरण है। अम्बेडकर ने दलित वर्गों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया, जो उन्हें सदियों से वंचित रखा गया था। दलित लोगों को शिक्षित करना, उन्होंने सोचा, उनमें चेतना, आत्म–सम्मान और गरिमा की भावना पैदा करने का एक निश्चित तरीका था। लोगों को आपस में स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों की खेती करने के लिए प्रेरित किया; यह शिक्षा के माध्यम से ही संभव था। यह बारी एक प्रबुद्ध राष्ट्रीय जीवन की मुख्यधारा में उनके प्रगतिशील आत्मसात के लिए आवश्यक सांस्कृतिक आधार प्रदान करेगी। डॉ. अम्बेडकर ज्ञान और चरित्र के प्रतीक थे। उन्होंने शिक्षा को प्रकाश और धारणा के दरवाजे तक पहुंचने के लिए अंधेरे और अज्ञान के क्षेत्रों को हटाने के साधन के रूप में माना। उन्होंने समाज के निचले तबके के बीच हिंदू समाज में सामाजिक पतन की स्थिति के बारे में जागरूक करने और सम्पूर्ण मानवता के लाभ के लिए सामाजिक व्यवस्था को बदलने के लिए शिक्षा के अपने दर्शन का इस्तेमाल किया।

अपने शैक्षणिक संस्थानों के माध्यम से वह सभी के शैक्षिक विकास के लिए प्रयास करता है। वह वास्तविक अर्थों में एक जैविक बुद्धिजीवी थे। शिक्षा के प्रति डॉ. अम्बेडकर के योगदान और उनकी स्वतंत्र सोच ने उन्हें दुनिया के बौद्धिक स्वतंत्र बना दिया। उन्होंने शिक्षा के अपने दर्शन को प्रतिपादित किया और बड़े पैमाने पर दलितों के दृष्टिकोण को प्रभावित किया। उनके शानदार अकादमिक कैरियर को सम्मानित करने के लिए उनकी प्रतिमा को लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स के प्रवेश द्वा पर रखा गया है और नीचे ''ज्ञान का प्रतीक'' लिखा है। यह दर्शाता है कि किस तरह महान छात्र और शिक्षाविद् उत्कृष्टता की प्रशंसा करते थे। शिक्षा और उनके शैक्षिक दर्शन पर डॉ. अम्बेडकर के विचार आज भी 21वी सदी में सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक विकास के लिए प्रासंगिक हैं।

कांबले और धवलेश्वर (2014)– बाबा साहेब प्रगतिशील राज्य के मास्टरमांइड थे, उन्होंने अपनी पवित्र आत्मा के साथ राष्ट्रवादी, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण विकसित किया है। जाति व्यवस्था वर्ग, अस्पृश्यता के अभ्यास और जाति, धर्म, रंग, लिंग और भौगोलिक स्थान के आधार पर भेदभाव के बारे में उनके विचार किसी भी देश के आधार पर विभाजित नहीं होना चाहिए। इस तरह के हिस्से देश के विकास के लिए पूरी तरह से खतरा है। इस सम्बन्ध में उन्होंने भारतीय समाज और संसद के सामने अपने कई अनुभव साझा किए, विशेष रूप से उन्होंने धर्मनिरपेक्ष राज्य के लिए प्रस्तावित किया। उनके विचार के परिणामस्वरूप भारत ने संविधान में धर्मनिरपेक्षता को अपनाया। उन्होंने हाशिए के वर्गों के सशक्तिकरण के लिए योजना आयोग को कई नीतियां प्रस्तावित की, एससी, एसटी, ओबीसी और महिलाओं के लिए आरक्षण इन श्रेणियों के कल्याण के लिए उठाया गया प्रमुख कदम है। भूमिहीन समुदायों और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए अम्बेडकर का समकालिक विचार। उनका महान सामाजिक सरोकार और विकासात्मक रवैया था। उन्हीं के विचार से हम अगले कुछ दशकों में महाशक्ति बनने जा रहे हैं।

सालागारे (2017) ने अध्ययन किया कि डॉ. अम्बेडकर को पता था कि समानता और सामाजिक न्याय के सिद्धान्तों पर समाज के पुनर्निर्माण के लिए शिक्षा आवश्यक पूर्व शर्त थी। भारतीय समाज में शिक्षा के विकास का अध्ययन करते हुए उन्होंने पाया कि महाराष्ट्र में पेशवा के शासन के दौरान और ब्रिटिश राज के पहले के दौर में,

शिक्षा का अधिकार उच्च जातियों तक ही सीमित था। जाति और लिंग में भेदभाव के बिना जनता की शिक्षा के लिए संघर्ष किया। बजट पर बहस में भाग लेते हुए उन्होंने कहा, शिक्षा एक ऐसी चीज है जिसे हर किसी की पहुंच में लाया जाना चाहिए। शिक्षा विभाग एक विभाग नही है जिसे क्विडप्रोक्वो के आधार पर माना जा सकता है। शिक्षा को हर संभव तरीके से और सबसे बड़ी संभव सीमा तक सस्ता होना चाहिए। बॉम्बे विश्वविद्यालय अधिनियम और प्राथमिक शिक्षा संशोधन विधेयक पर चर्चा में सक्रिय भाग लेते हुए उन्होंने शिक्षा के सुधार में अपने विचार का योगदान दिया। उन्होंने लोगों के शिक्षा समाज की स्थापना की, और बॉम्बे और औरंगावाद में कॉलेज शुरू किए। उन्होंने सरकार के साथ बार–बार कहा कि बिना किसी भेदभाव के सभी को समान शैक्षिक अवसर प्रदान करना उनकी जिम्मेदारी थी, हालांकि लड़कों और लड़कियों को अलग–अलग शिक्षा मिलनी चाहिए। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अतीत में भारत को जन्म के आधार पर जातियों में विभाजित किया गया था। निचली जातियाँ यानी अनुसूचित जातियों के लोगों को शैक्षिक सुविधाओं सहित सभी विशेषाधिकारियों और सुविधाओं से वंचित कर दिया गया था। वे इतने गरीब थे कि वे अपने बच्चों को शिक्षण संस्थानों में भेजने के बारे में सोच भी नहीं सकते थे। उन पर शैक्षणिक संस्थानों को बंद कर दिया गया था। यदि कोई अनुसूचित जाति प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने की हिम्मत करती तो उसे कक्षा के बाहर बैठना पड़ता था। उसकी छाया किसी अन्य छात्र पर नहीं पड़नी चाहिए।

धवलेश्वर (2017) ने देखा कि डॉ. बी. आर. अम्बेडकर का मानना था कि अछूतों की उन्नति में शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान होगा। उन्होंने हमेशा अपने अनुयायी को ज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्टता को संग्रहीत करने के लिए प्रोत्साहित किया, ज्ञान को बल देने वाला। शिक्षा मनुष्य को प्रबुद्ध बनाती है, अपने आप को सम्मान देती है और उसे भौतिक रूप से बेहतर जीवन जीने में मदद करती है। अछूतों के पतन के कारणों में से एक यह था कि उन्हें शिक्षा के अधिकार से वंचित कर दिया गया था। अम्बेडकर ने निचली जातियों के बीच शिक्षा को पर्याप्त रूप से प्रोत्साहित नहीं करने के लिए ब्रिटिश नीति की शिक्षा की आलोचना की। उन्होंने महसूस किया कि ब्रिटिश शासन के तहत भी शिक्षा मुख्य रूप से अछूत और शिक्षा के विभिन्न केन्द्रों के लिए जारी रही। गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद के सदस्य होने के दौरान, यह अछूत

छात्रों के लिए शिक्षा के छात्रवृत्ति बढ़ाने का साधन था। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर चाहते थे कि अछूतों को उदार शिक्षा और तकनीकी शिक्षा दोनो मिले। वह विशेष रूप से धार्मिक तत्वावधान में शिक्षा के विरोधी थे। उन्होंने चेतावनी दी कि शिक्षा में केवल धर्मनिरपेक्ष ही छात्रों के बीच स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों को स्थापित कर सकता है। डॉ. अम्बेडकर जानते थे कि भारतीय एक बहुभाषी देश होने के कारण क्षेत्रीय दबाव और खींचतान के कारण देश की एकता के लिए समस्याओं की संभावना है। दूसरे भाषाई राज्य सामाजिक और सांस्कृतिक तनावों को दूर करने में मदद करेगें। अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. अम्बेडकर ने कहा, ''भाषाई राज्यों को बनाने की कोशिश में भारत सही रास्ते पर चल रहा है। यह वह सड़क है जिसका सभी राज्यों ने अनुसरण किया है। अन्य भाषाई राज्यों के मामले में वे शुरू से ही रहे हैं। भारतीय के मामले में उसे लक्ष्य तक पहुंचने के लिए खुद को रिवर्स गियर में रखना होगा। लेकिन जिस सड़क पर वह यात्रा करने का प्रस्ताव रखती है वह एक अच्छी सड़क है।'' अम्बेडकर न केवल भारतीय संविधान के जनक थे; वह एक महान स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिक नेता, दार्शनिक, विचारक, अर्थशास्त्री, सम्पादक, समाज सुधारक, बौद्ध धर्म के पुनरूत्थानवादी थे और भारत में महिलाओं की उन्नति के रास्ते में आने वाली बाधाओं को तोड़ने वाले पहले भारतीय थे। उन्होंने हिन्दुओं और भारतीय समाज के अन्य वर्गों के लिए सामान्य नागरिक संहिता को संहिताबद्ध करके ठोस और ईमानदार प्रयासों की नींव रखी। उन्होंने कहा कि महिलाओं को अधिक महत्वपूर्ण सामाजिक शिक्षा, उनकी भलाई और सामाजिक–सांस्कृतिक अधिकार दिए जाने चाहिए। उन्होंने हिंदुओं और भारतीय समाज के अन्य वर्गों के लिए सामान्य नागरिक संहिता को संहितावाद करके ठोस और ईमानदार प्रयासों की नींव रखी। उन्होंने कहा कि महिलाओं को अधिक महत्वपूर्ण सामाजिक शिक्षा, उनकी भलाई और सामाजिक–सांस्कृतिक अधिकार दिए जाने चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारतीय महिलाओं के प्रत्येक वर्ग को उनका उचित हिस्सा दिया जाना चाहिए और यह महिलाओं की गरिमा और शील को बनाए रखने और उनकी रक्षा करने के लिए आवश्यक है।

मंडल (2020) ने अध्ययन किया कि अम्बेडकर 20वीं सदी के एक महान नेता थे। हेवास बौद्धिक, विद्वान और राजनेता थे और उन्होंने निर्माण में बहुत योगदान

दिया। उन्होंने दलित जनता को मुक्ति दिलाने और लाखों दलित वर्गों के मानवाधिकारों को सुरक्षित करने के लिए कई आंदोलनों का नेतृत्व किया। उन्होंने स्वतंत्र भारत के संविधान को बनाने में अपने अपार योगदान के माध्यम से एक अमिट छाप छोड़ी है। वह सामाजिक न्यास प्राप्त करने के लिए संघर्ष के प्रतीक के रूप में खड़े हैं। डॉ. अम्बेडकर फाउंडेशन बाबा साहेब की सिफारिशों के अनुसरण में स्थापित किया गया। डॉ. अम्बेडकर की शताब्दी समारोह समिति का गठन तत्कालीन प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में किया गया था। फाउंडेशन को 24 मार्च, 1992 को समाज पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत कल्याण मंत्रालय के तत्वावधान में पंजीकृत किया गया था, जो अब सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय है।

राजशेखर (2021)– बताते हैं कि बौद्ध धर्म ने दलितों को पूजा के लिए पवित्र स्थान प्रदान करके उनके जीवन की भरपाई करने का प्रयास किया। उनका यह भी तर्क है कि बौद्ध धर्म और डॉ. अम्बेडकर ने दलितों को उनकी जाति पहचान को मजबूत करने में मदद की। राजशेखर जाति के एकीकरण और उप–जाति के राजनीतिक संरेखण के प्रभाव को राष्ट्र के हित में भी मानते हैं। उनका मानना है कि कम्युनिस्ट और ब्राह्मण दोनो जाति की पहचान के खिलाफ हैं क्योंकि उनका मानना है कि ऐसी पहचान राष्ट्रीयता के खिलाए जायेगी। हालांकि, राजशेखर याद दिलाते हैं कि राष्ट्रीय एकता हिंदू जातियों का नारा है और दलितों के लिए जाति की पहचान राष्ट्रीय पहचान जितनी ही महत्वपूर्ण है। भारत में जातिवाद के संदर्भ में राष्ट्रवाद पर डॉ. अम्बेडकर के तर्क को याद रखना महत्वपूर्ण है। राजशेखर के अनुसार राष्ट्रवादी विमर्श ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था द्वारा नियंत्रित होता हैं। उनके अनुसार, राष्ट्रवाद बहुजनों को ध्यान भटकाने के लिए ब्राह्मणों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली रणनीति है। यदि राष्ट्रवाद किसी की पहचान से अलग है, तो किसी की संगति की रिश्तेदारी में परिभाषित करना, यह रिश्तेदारी का मामला है। इस सम्बन्ध में राजशेखर का मानना है कि जाति राष्ट्र की इस परिभाषा के सबसे करीब है। उनका तर्क है कि राष्ट्र की धारणा को एक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं किया जा सकता है। बल्कि रिश्तेदारी और फैलोशिप के पैटर्न तक सीमित किया जा सकता है। इसलिए उनका मानना है कि भारत कई देशों का देश है, जिसमें अछूतों की अलग–अलग जाति की पहचान शामिल है।

अध्ययन का महत्व

डॉ. अम्बेडकर द्वारा जो कार्य दलित वर्गों के लिए किये उनका महत्व आने वाले समय में भी रहेगा। वर्तमान परिपेक्ष में अस्पृश्य दलित समाज को अब तक फायदा था। परन्तु जागृति न होने के कारण उतना फायदा न हुआ है। जितना होना चाहिए था। डॉ. अम्बेडकर के सपने अधूरे हैं क्योंकि बाबा साहेब एक शिक्षित समाज की कल्पना करते थे। समाज में सभी पढ़े–लिखे होने चाहिए। दलित वर्ग के व्यक्तियों को घृणा की दृष्टि से नही देखा जाना चाहिए। समाज में छूआछूत को जड़ से उखाड़ फैकना चाहिए।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो कि व्यक्ति में स्वतन्त्रता, समानता, बन्धुत्व की भावना पैदा कर सके। शिक्षा का सिद्धांद समानता का सिद्धांत होना चाहिए ना कि धार्मिक जाति–पाति । डॉ. साहब ने स्त्री शिक्षा पर बल दिया। वे देश में व्यवसायिक और तकनीकी शिक्षा का प्रचलन करना चाहते थे। ताकि देश तरक्की कर सके। वे नैतिक शिक्षा के भी पक्षधर थे।

बी.आर.अम्बेडकर के अनुसार, समाज हमेशा वर्गों से बना होता है। उनका आधार भिन्न हो सकता है। वे आर्थिक या बौद्धिक या सामाजिक हो सकते हैं, लेकिन समाज में एक व्यक्ति हमेशा एक वर्ग का सदस्य होता है। यह एक सार्वभौमिक तथ्य है और प्रारम्भिक हिंदू समाज इस नियम का अपवाद नहीं हो सकता था और वास्तव में हम जानते हैं कि ऐसा नही था। तो वह कौन सा वर्ग था जो पहले खुद को जाति में बनाता था। वर्ग और जाति के लिए कहने के लिए अगले दरवाजे पड़ौसी हैं और यह केवल अवधि है जो दोनो को अलग करती है। जाति एक संलग्न वर्ग है।

जाति की उत्पत्ति के बारे में बी.आर. अम्बेडकर ने कहा कि जाति की उत्पत्ति के अध्ययन में हमें इस सवाल का जवाब मिल जाना चाहिए वह कौन सा वर्ग है जिसने इस परिक्षेत्र को अपने चारों ओर खड़ा किया है। विचारधीन रीति–रिवाज हिन्दू समाज में मौजूद थे। ये रिवाज अपनी सख्ती पर केवल एक ही जाति में प्राप्य है। अर्थात् ब्राह्मण जो हिंदू समाज के सामाजिक पदानुक्रम में सर्वोच्च स्थान रखते हैं और चूंकि गैर ब्राह्मण जातियों में उनका प्रचलन उनके पालन के व्युत्पन्न है, वे न तो सख्त हैं और न ही पूर्ण हैं। यदि गैर ब्राह्मण जातियों में इन रीति रिवाजों का प्रचलन व्युत्पन्न है तो यह साबित करने के लिए कोई तर्क नहीं है कि कौन सा वर्ग जाति की

संस्था का जनक है। इन रीति रिवाजों का कड़ाई से पालन और सभी प्राचीन सभ्यता में पुरोहित वर्ग द्वारा दी गई सामाजिक श्रेष्ठता यह साबित करने के लिए पर्याप्त है कि वे इन अप्राकृतिक साधनों के माध्यम से स्थापित और बनाए रखी गई उस अप्राकृतिक संस्था के प्रवर्तक थे।

समस्या कथन

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक, दार्शनिक, नेतृत्वात्मक विचारों के संदर्भ में उनके शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन

अध्ययन का उद्देश्य

डॉ. अम्बेडकर के दर्शन में आत्म सम्मान और मानव गौरव का स्थान सर्वोपरि एवं अति महत्वपूर्ण है। वे शिक्षा के माध्यम से न्याय, समानता, बन्धुत्व, स्वतंत्रता तथा निडरता के गुणों को विकसित करना चाहते थे। वे शिक्षा की व्यवसायिक, तकनीक उच्च स्तर सहित रोजगार प्रदान करने वाली बनाने के पक्षधर थे। इस प्रकार की शिक्षा समाज में स्थिरता लाती है। डॉ. अम्बेडकर इस समय की उद्देश्यहीन शिक्षा से उदास थे। वे चाहते थे कि शिक्षा का उद्देश्य, धर्म में अंधविश्वास, पाखण्ड, भय, स्वार्थ और बुरी भावनाएं उत्पन्न करना चाहिए। डॉ. अम्बेडकर शिक्षा में मानव मूल्यों के पक्षधर थे। वे चाहते थे कि शिक्षा कि शिक्षा को सामाजिक तथा नैतिक गुण उत्पन्न करने चाहिए। उनका स्पष्ट विचार था कि जब तक शिक्षा को मानव गुणों एवं मूल्यों पर आधारित नही किया जाता, समाज में कोई भी परिवर्तन नही लाया जा सकता।

डॉ. अम्बेडकर ने देखा कि बुद्धिमान वर्ग द्वारा तोतों व दूसरे पक्षियों की प्रशिक्षण तकनीकें भारत में गधे, घोड़ों, हाथियों और बकरियों सभी पर लागू की जा रही है परन्तु समाज का पिछड़ा वर्ग इस शिक्षा से वंचित था। इस प्रकार इस वर्ग को पशुओं से भी गिरा हुआ माना जाने लगा। डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि इसमें लगे आदमियों को हटा देना चाहिए और अगर वे इस प्रक्रिया को रोकने के लिए तैयार नही होते तो उन्हें दंड देना चाहिए। डॉ. अम्बेडकर का विश्वास था कि केवल शिक्षा ही एकता भाईचारा व राष्ट्र के लिए प्यार का सागर देती है।

- डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक, दार्शनिक का अध्ययन करना।
- डॉ० भीमराव अम्बेडकर के जीवन दर्शन का अध्ययन करना।
- डॉ० भीमराव अम्बेडकर के नेतृत्वात्मक विचारों के संदर्भ में उनके शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
- डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक, दार्शनिक, नेतृत्वात्मक विचारों के संदर्भ में उनके शैक्षिक विचारों की तुलना करना।
- डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक एवं शैक्षिक विचारों से वर्तमान समाज में सुधार।
- डॉ० भीमराव अम्बेडकर द्वारा शिक्षा के उद्धार में किये गये कार्यो से वर्तमान में शिक्षा प्रणाली में सुधार।

शोध विधि

शोध विधि विज्ञान में कुछ कमबद्ध प्रणाली को सम्मिलित किया जाता है। शोधकर्ता को समस्या चयन से निष्कर्षो तक क्रियाओं को पहचानना होता है। शोध विधि में अनुसन्धान की क्रियाओं को वैज्ञानिक ढंग से वैध रूप में नियोजन किया जाता है। शोध विधि में प्रकरण तथा प्रविधियों का महत्व, समुचित प्रयोग पर निर्भर होता है। शोधकर्ता को प्रकरणों तथा प्रविधियों का ज्ञान शुद्ध रूप में होना चाहिए तभी उनका समुचित रूप में प्रयोग कर सकता है। शोध विधि विज्ञान में समस्या सम्बंधि सामान्य क्रियाओं को किया जाता है तथा सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा की सहायता से परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया जाता है। उनकी पुष्टि के लिए प्रकरणों, परीक्षणों का चयन किया जाएगा। जिससे प्रदत्तों का संकलन किया जायेगा। शोध प्रारूप तथा शोध विधि को एक ही अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। क्योंकि शोध की रूप रेखा को ही शोध प्रारूप या विधि विज्ञान कहते है। प्रस्तुत शोध में अनुसन्धान की दार्शनिक विधि का प्रयोग किया गया है। शोधकर्ता ने अपने कार्य में डॉ. अम्बेडकर के दार्शनिक विचारों को लिया है ताकि यह अध्ययन दार्शनिक विधि पर आधारित रहे। दार्शनिक विधि के साथ शोधकर्ता वे ऐतिहासिक तथ्यों को भी सहायता ली है, जोकि अन्य दार्शनिकों लेखकों व अम्बेडकर जी द्वारा दिए गए। इस प्रकार वह अध्ययन डॉ. साहेब से सम्बन्धित

है क्योंकि किए गए विषय के अनुसार डॉ. साहब जी के द्वारा भारतीय समाज में उठाए गए कदमों का अध्ययन किया गया है। डॉ. अम्बेडकर ने अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के उत्थान के लिए भारतीय संविधान में विभिन्न अनुच्छेद व धाराएं डाली। जिसका सवर्ण लोग चाहते हुए भी विरोध न कर सकें।

अनुसंधान के आंकडे

शोधकर्ता ने अपने विषय को पूर्ण करने के लिए डॉ. अम्बेडकर जी द्वारा दिए गए दार्शनिक तथ्यों की सहायता ली है। इस कार्य की सूचनाएं विभिन्न स्त्रोंतों द्वारा एकत्रित की गई।

(क) प्राथमिक स्त्रोत :

प्राथमिक स्त्रोत के अंतर्गत किसी विशिष्ट दार्शनिक प्रणाली के विशिष्ट पक्षों का विवेचना किया जाता है कि उस प्रणाली के ज्ञान, मीमांसा, तत्व मीमांसा तथा नीति शास्त्र क्या है? इस प्रकार का अध्ययन किसी राष्ट्र अथवा व्यक्ति के समुह की विचार प्रणाली का भी अध्ययन किया जाता है। इसके अन्तर्गत विशेष युग की उपलब्धियाँ, अभ्यास किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत विशेष युग के जीवन की उपलब्धियाँ, अभ्यास तथा उनके साहित्य का अध्ययन किया जाता है। इसके अन्तर्गत विशेष युग की विचार प्रणाली का भी अध्ययन किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत विशेष युग के जीवन की उपलब्धियाँ, अभ्यास तथा उनके साहित्य किया जा सकता है। इसके तहत डॉ. अम्बेडकर जी द्वारा दिए गए विचारों को लिया जाएगा। इसके लिए उनके द्वारा दिए गए भिन्न–भिन्न स्थानों के भाषणों को लिया जाएगा। विषय से सम्बन्धित डॉ. अम्बेडकर जी की विभिन्न रचनाओं का सहारा लिया जाएगा। उनकी विश्व प्रसिद्ध रचना भारतीय संविधान की भी सहायता ली जायेगी।

(ख) द्वितीयक स्त्रोत :

द्वितीयक स्त्रोत का प्रयोग दार्शनिक शोध कार्यो में अधिक किया जाएगा। इसमें किसी एक महान दार्शनिक के विचारों, उसके साहित्य जीवन का आलोचनात्मक अध्ययन किया जाएगा, जिसमें प्रमुख रूप से उनकी तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा का विवेचना होता है तथा शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों,

अनुशासन तथा शैक्षिक प्रशासन का निर्धारण किया जाता है। इसके तहत डॉ. अम्बेडकर जी के सम्बन्ध में अन्य लेखकों द्वारा लिखी गई रचना व उनके विचारों को लिया जाएगा। इसके लिए कोई पुस्तकों, समाचार–पत्रों, संसदीय भाषणों (जोकि विभिन्न नेताओं द्वारा दिए गए) की सहायता ली जायेगी। इस प्रकार के आंकडों को एकत्रित करने के लिए ऐतिहासिक अभिलेखों को लिया जाएगा।

तकनीक :

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक स्वरूप को आधार मानकर शोधकार्य को सम्पर्ण किया जायेगा क्योंकि विचारों के आदान–प्रदान से एक नई बात का रूप निखर कर आता है। जो नए ज्ञान की और इंगित करता है उनके दार्शनिक विचारों को गुणात्मक विश्लेषण द्वारा महत्वपूर्ण बनाया गया।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर द्वारा भारतीय समाज के विकास में किए गए योगदान का अध्ययन किया गया है। बहुत से समाज सुधारक इस समाज व्यवस्था को अच्छा मानते थे। इस समाज व्यवस्था का आलोचनात्मक विश्लेषण करके डॉ. अम्बेडकर द्वारा बताई गई तकनीक के आधार पर शोध कार्य पूरा करने की कोशिश की गई है।

शोध अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन उदयमीन शैक्षिक आवश्यकताओं के परिक्षेप में सामाजिक, दार्शनिक, नेतृत्वात्मक एवं शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन तक ही सीमित रहेगा।

प्रस्तावित अध्ययन रूपरेखा

- अध्याय 1 – प्रस्तावना
- अध्याय 2 – डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक, दार्शनिक विचार।
- अध्याय 3 – डॉ० भीमराव अम्बेडकर के जीवन दर्शन का अध्ययन करना।
- अध्याय 4 – डॉ० भीमराव अम्बेडकर के नेतृत्वात्मक विचारों के संदर्भ में शैक्षिक विचारों अध्ययन।

- अध्याय 5 – डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक, दार्शनिक, नेतृत्वात्मक विचारों के संदर्भ में शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन
- अध्याय 6 – डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक एवं शैक्षिक विचारों से वर्तमान समाज में सुधार।
- अध्याय 7 – डॉ० भीमराव अम्बेडकर द्वारा शिक्षा के उद्धार में किये गये कार्यो से वर्तमान में शिक्षा प्रणाली में सुधार।
- अध्याय 8 – निष्कर्ष एवं उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- साहेब, बाबा, डॉ. अम्बेडकर सॅपूर्ण वाड्.मय (खण्ड–19), डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2002 ।
- अहीर, डी.सी., डॉ. अम्बेडकर और भारतीय संविधान, बुद्ध विहार, लखनऊ, 1973 आर्य, जिया लाल, ' दलित कहाँ जाएं,' प्रंकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2002।
- आहुवालिया, वी.के. और आहुवालिया, एस., बी.आर. अम्बेडकर एण्ड हयूमन राईट, विवके पब्लिसिंग कम्पनी, दिल्ली, 1981 ।
- एवॉलास ब्रिटिश, गरीब बच्चों की शिक्षा, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली, 1997।
- कशीरसागर, आर.के., बाबा साहब के राजनैतिक विचार, किताब घर, नई दिल्ली, 2000।
- कशीर आर.के., दलित मूवमैंट इन इंडिया एण्ड इट्स लीडर, एम.डी. पब्लिकेशन प्रा. लि. नई दिल्ली, 1994 ।
- कीर, धनजंय, डॉ अम्बेडकर लाईफ एण्ड मिशन, पापूलर पब्लिकेशन, मुम्बई, 2005 ।
- कुबेर, डब्लू.एन., अम्बेडकर : ए क्रिटिकल स्टेडी, पीपल्स पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2001 ।
- कर्दम, जयप्रकाश, इक्कीसवीं सदी में दलित आन्दोलन सहित्य एंव समाज–चिंतन, पंकज पुस्तक मन्दिर, दिल्ली, 2005 ।
- केली, जर्नल ऑफ इण्डियन फिलोस्फी, (वॉल्यूम–29) कलवर एकेडमी पब्लिसर,

अगस्त, 1996।

- गुप्ता, विश्व प्रकाश, भीमराव अम्बेडकर व्यक्तित्व औश्र विचार, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1998।
- गुप्ता राजेश कुमार, भारत में आरक्षण नीति, मानत पब्लिकेशन प्रा.लि., दिल्ली, 2000।
- जटवा, डी.आर., अम्बेडकर फिलॉस्फी ऑफ रिलिजन, इनसी पब्लिशर्स, जयपुर, 1998।
- जातक, डी.आर , डॉ. अम्बेडकर थॉट, ए.पी.एच. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, नई दिल्ली, 1997।
- तोमर, देवेन्द्रपाल सिंह, हिन्दू अछूत जातियों में छूटाछूत : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, पंकज पुस्तक मन्दिर, दिल्ली, 2005 ।
- दास बी., थस स्पोक अम्बेडकर (वाल्यूम–4), अम्बेडकर साहित्य प्रकाशन, बंगलौर, 1980
- धान, हरिमोहन, आरक्षण व्यवस्था के बदलते आयाम, ए सोशल सांईस रिसर्च जरनल, माध्यप्रदेश, दलित साहित्य आकादमी, प्रकाशन, उज्जैन, अप्रैल–सितम्बर, 2004 ।
- नारायणराव, जे.एस., समशखर, ए.बी.आर. अम्बेडकर हिज रिलेवैंस टूडे, ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली, 2002 ।
- पटवर्धन, सुनन्दा, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, 1931 ।
- पालीवाल, डॉ. अम्बेडकर और समाज व्यवस्था, किताब घर, नई दिल्ली, 1996 ।
- बक्शी, एस.आर., डॉ. बी.आर. अम्बेडकर एण्ड कान्सटीयूलिस्ट अनमोल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2000।
- बक्शी, एस.आर, पालिटिक्ल आईडोलॉजी आफ बी.आर. आम्बेडकर, दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन प्रा.लि., नई दिल्ली, 2000।
- बौद्ध शान्ति स्वरूप, पोरियार सचित्र जीवनी, सम्यक्, प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006 ।

- बैस्ट, जे. डब्लूय, रिसर्च इन एजूकेशन, विवेक पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली प्रिंटिश हाल, न्यूयार्क, 1954 ।
- भारती, के.एस., इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एमिनेट थिंकरज, कॉनसप्ट पब्लिसिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 1998।
- मैत्यू, थामस, राम, सावंत, अशोक भारती, क्रान्ति के प्रतीक अम्बेडकर, धम्म बुक्स प्रकाशक, नई दिल्ली, 1994 ।
- मून, बसंत, समता के समर्थक अम्बेडकर, नैशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, नई दिल्ली, 2004 ।
- बसंत मूलन, डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर राईटिंग एण्ड स्पीच (वाल्यूम–15), एजूकेशन डिपार्टमेंट गर्वनमैंट, महाराष्ट्र, 1995 ।
- यदुलाल, कुसुम, दलित शिक्षा का परिदृश्य, कनिष्का डिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली, 2005।
- रंगा, एम.एल., बी.आर. अम्बेडकर हिज लाईफ वर्क एण्ड रिलवैंस मनोहर पब्लिर्शस, नई दिल्ली, 1998 ।
- लिपर, वी.आर.के., डॉ. अम्बेडकर एण्ड दलित फ्युचर, बी.आर. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, दिल्ली, 1990 ।
- विश्वास नीतीश, राष्ट्रनेता डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, विद्यानिधि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005 । विद्रोही, एम.आर., दलित दस्तावेज, सम्यक् प्रकाशन् नई दिल्ली, 2004 ।
- शर्मा, एस.राम., एजूकेशन ऑफ वूमैन ऑफ शडूयूल्ड कास्ट एण्ड शडूयूल्ड ट्राईब्स, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1996 ।
- शर्मा, सी.एल., सोशल मोबायल्टी अमंग शडयूल्ड कॉस्ट, एम.डी. पब्लिकेशन प्रा.लि., नई दिल्ली, 1996 ।
- शुक्ला, जे., जे., बी.आर. अम्बेडकर गांधी एण्ड टैगोर : ए कम्पेरेटीव स्टेडी ऑन एजूकेशन, कार्णावती पब्लिकेशन, अहमदाबाद, 1998 ।
- श्याम राधे, भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर, धीरज पॉकेट बुक्स, मेरठ, 2000 ।
- सतू नानकमचन्द्र, डॉ. अम्बेडकर कुछ अनछुए प्रसंग सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली,

2003 । सगवान, ओ.पी. दलित सोसायटी एण्ड दा जेलन्ज ऑफ, डिवेलपमेंट, मॉमन वेल्थ पब्लिसर, नई दिल्ली, 1976 ।

- त्रिपाठी, आर.वी.,दलितः ए सब हुसैन सोसायटी, आशीष पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1994
- कुमारी, राजेन्द्री, डॉ. भीमाराव अम्बेडकर का दलित वर्गों के शैक्षिक और सामाजिक उत्थान के लिए योगदान का अध्ययन, पी.एच.डी. शोध प्रबन्ध, शिक्षा विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, 2001 ।
- सिंह, ईश्वर, ''डॉ.बी.आर. अम्बेडकर कन्ट्रीब्यूशन टू दलित सोसायटी इन इंडिया, लघु शोध–प्रबन्ध, डिपार्टमैंट ऑफ डिसटेन्स एजूकेशन, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र 1998।
- आनंद, डॉ. भीमराव अम्बेडकर और सामाजिक न्याय, लघु रोध– प्रबन्ध, राजनीतिक शास्त्र विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र 2004 ।